# मनमोहन के मंत्रिमंडल में उत्तर प्रदेश नहीं

नई दिल्ली उत्तर प्रदेश ने भले ही पंद्रहवीं लोकसभा के चुनावों में कांग्रेस को निहाल कर दिया हो मगर प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) सरकार के शुक्रवार को शपथ लेने वाले मंत्रियों में इस प्रदेश का कोई नुमाइंदा नहीं है।कांग्रेस ने उत्तर प्रदेश में अपनी उम्मीदों से भी बेहतर प्रदर्शन करते हुए लोकसभा की 80 में से 21 सीटों पर कामयाबी हासिल की है। लेकिन डा. सिंह समेत जिन 20 कैबिनेट मंत्रियों ने शपथ ली उनमें से कोई भी इस राज्य का नहीं है। 35 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में से सिर्फ 14 को कैबिनेट में प्रतिनिधित्व दिया गया है।जिन राज्यों को इसमें नुमाइंदगी नहीं मिली उनमें उत्तर प्रदेश के अलावा गुजरात, उड़ीसा, हरियाणा, छत्तीसगढ, उत्तराखंड और झारखंड शामिल हैं। मंत्रिमंडल में सबसे ज्यादा तीन सदस्य महाराष्ट्र के हैं। पश्चिम बंगाल, केरल, कर्नाटक और असम के दो-दो मंत्रियों को शपथ दिलाई गई तमिलनाडु, जम्मू और कश्मीर, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश,बिहार ,दिल्ली,हिमाचल प्रदेश और राजस्थान का एक-एक सदस्य मंत्रिमंडल में है। मंत्रिमंडल के 20 सदस्यों में से प्रधानमंत्री समेत आठ राज्यसभा से हैं। ममता बनर्जी, अंबिका सोनी और मीरा कुमार समेत तीन महिलाओं को मंत्रिमंडल में जगह दी गई है जिसमें दो कांग्रेस की और एक तृणमूल कांग्रेस की सदस्य हैं।अल्पसंख्यक समुदाय के भी तीन सदस्यों को मंत्रिमंडल में शामिल किया गया है। डा. मनमोहन सिंह के कैबिनेट में शुक्रवार शाम शपथ लेने वाले मंत्रियों में से प्रधानमंत्री समेत 18 कांग्रेस, एक राष्ट्रवादी कांग्रेस और एक तृणमूल कांग्रेस का सदस्य हैं।अगले सप्ताह मंत्रिमंडल का विस्तार किए जाने की संभावना है जिसके बाद इसका मनमोहन के टीम का पूरा स्वरूप सामने आएगा। इस विस्तार में द्रविड़ मुनेत्र कषगम समेत संप्रग के अन्य घटक दलों को भी प्रतिनिधित्व दिया जाएगा।

## चीमा को सलाहकार बनाए जाने की तैयारी

चंडीगढ-पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल के सलाहकार रहे डा दलजीत सिंह चीमा जिन्हें कि अकाली दल ने श्री आनंदपुर साहिब से लोकसभा चुनावों के लिए उम्मीदवार बनाया था को फिर से सलाहकार बनाए जाने की तैयारी है। ज्ञात हो डा चीमा को जब लोकसभा चुनावों के लिए उम्मीदवार बनाया गया था उस समय उन्हें मुख्यमंत्री के सलाहकार पद से हटा दिया गया था।

## मजबूत हुए कमलनाथ...

पहले पेज से जारी...

विचारधारा के मामले में भी अर्जुनसिंह की कांग्रेस में सानी नहीं है. अल्पसंख्यक, दलित और आदिवासी हितैषी काम करने में भी अर्जुनसिंह हमेशा आगे रहे हैं. इसके लिये वे विवादों में भी आते रहे हैं. लेकिन उनकी कार्यशैली को लेकर खुद मनमोहन सिंह भी नाराज थे तथा गत लोकसभा चुनाव में उनके गृह जिले सीधी में उनकी बेटी का निर्दलीय चुनाव लड़ना शायद 10 जनपथ और सोनिया गांधी की नाराजी का कारण रहा है. जिसके चलते उन्हें मंत्रिमंडल से बाहर रखा गया है. हालांकि इसके पीछे स्वास्थ्यगत कारण बताए गये हैं मगर असली कारण उनकी कूटनीतिक राजनीतिक चाले ही है जिन्होंने उन्हें मंत्रिमंडल के बाहर का रास्ता दिखाया है. पहली खेप में ही कमलनाथ ने अपना स्थान बनाकर म.प्र. के अन्य सभी क्षत्रपों को बहुत पीछे छोड़ दिया है. यूं भी दिग्विजयसिंह के दस साल पद नहीं लेने और म.प्र. में रूचि कम लेने के चलते कमलनाथ के लिये चुनौती नहीं के बराबर है और लोकसभा एवं विधानसभा चुनाव में प्रदेश के उनके समर्थकों का अच्छा परफार्मेंस ने भी उन्हें मजबूती प्रदान की है. ऐसे में कमलनाथ का कांग्रेस की केन्द्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान बन गया है.

# करुणानिधि का रूठना और कांग्रेस का मनाना

पांच साल पहले जब संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की सरकार बनी थी तब भी करुणानिधि रूठ गए थे और आखिरकार उन्होंने अपनी सारी मांगें मनवा लीं। अब करुणानिधि को शिकायत यह है कि अगर 2004 में उनकी सारी मांगें मानी जा सकती थीं तो 2009 में क्यों नहीं? इसका जवाब करुणानिधि ही नहीं, सारा देश जानता है।2004 और 2009 में पार्टियों की राजनैतिक हैसियत में तो फर्क आया ही है, प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की हैसियत भी बदली है। 2004 में वे पहली बार प्रधानमंत्री बन रहे थे, कांग्रेस अपने सहयोगियों पर कहीं ज्यादा निर्भर थी और कांग्रेस के वरिष्ठ और अनुभवी नेता भी प्रधानमंत्री को ज्यादा नहीं गिनते थे। उनके कई मंत्रियों पर अक्षमता

और भ्रष्टाचार के आरोप थे और कई मंत्री पूरी तरह स्वायत्त थे।अब डॉ. मनमोहन सिंह जवाहरलाल नेहरू के बाद भारत के ऐसे दूसर प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने पांच साल का एक कार्यकाल पूरा करने के बाद दूसरी बार शपथ ली है और उन पर गठबंधन के सहयोगी दलों का दबाव भी कम है।

हालांकि कांग्रेस ने करूणानिधि को मनाने का नया फार्मूला तैयार लिया है यह फार्मूला द्रमुक के सामने पेश किया जाएगा. जिसमें छह की जगह सात मंत्रियों को शामिल किया जाएगा. संभावना है कि द्रमुक इस प्रस्ताव पर अपनी सहमति दे दे.

पहले पेज से जारी...

# मजबूती से शुरु हुई मनमोहक पारी

हालांकि मंत्रिमंडल गठन के पूर्व तृणमूल नेत्री ममता बनर्जी ने भी दबाव बनाने की राजनीति की थी लेकिन जल्द ही पं. बंगाल में विधानसभा चुनाव होने की स्थिति के चलते अंततः बंगाल की इस शेरनी को झुकने पर मजबूर कर दिया. करूणानिधि का नाराज होकर चैन्नई जाना और फारूक अब्दुल्ला का अफ्रीका चले जाना भी सोनिया गांधी को झुका नहीं पाया. एक सीमा के बाद कांग्रेस नेतृत्व का उनके आगे नहीं झुकना देश की जनता को अच्छा संदेश देने वाला है. यह उन मतदाताओं का सम्मान भी है. जिन्होंने अपना मत देते हुए इस इच्छा का इजहार किया था कि नई सरकार हर छोटे-मोटे मामले में किसी के आगे झुकने को बाध्य न हो और दृढ़ता से निर्णायक सरकार की भूमिका निभाए. मंत्रिमंडल गठन में जिन 19 मंत्रियों को मनमोहन सिंह ने अपनी टीम में शामिल किया है उनमें से कुछ दागदार जरूर है. मगर अधिकांश अनुभवी और सक्षम है. अधिकांश की उम्र 60 साल से ऊपर है तथा उन्होंने राज्य से लेकर केन्द्र तक सत्ता चलाने और विभागों में अच्छा परफार्मेंस देने का रिकॉर्ड बनाया है. उनकी कार्य क्षमता संदेह से परे हैं. अनुभवी परिपक्व और ज्यादा बुरे में से कम बुरे लोगों को साथ लेकर बनी मनमोहन की टीम वाकई में मन मोहक है, हालांकि अभी यह टीम अधूरी है, एक दो दिन में इस सूची में और भी नाम जुड़ेंगे हो सकता है. नाराज घटक दल भी आखिरकार मंत्रिमंडल में शामिल हो सकते हैं, ऐसे में संभव है मनमोहन की टीम देश की जनता के विश्वास पर खरी उतरे मगर मनमोहन सरकार के सामने महंगाई, मंदी, देशी विदेशी समस्याओं, बहुराष्ट्रीय कंपनियों और घटक दलों के दबाव जैसी कई समस्याएं चुनौती बन कर खड़ी है, सरकार इनमें कैसे निपटती है यह तो समय ही बताएगा.

# क्योंकि बारात में नाईट सूट नहीं सूट पहने जाते हैं!

चक्रम

सुरेन्द्र बंसल

मनमोहन सिंह के नए केबिनेट की औसत उम्र 67 साल है.जाहिर है जिन युवाओं के दम पर कांग्रेस ने सत्ता फतह की है उन्हें शामिल करने के बाद यह औसत कुछ घट जायेगा. लेकिन सवाल इच्छाशक्ति का है. मनमोहन सिंह चाहते तो युवाओं पर विश्वास की इच्छाशक्ति दिखा सकते थे,उन्होंने ऐसा मौका खो दिया जिससे तत्काल पुरानी सरकार का नया कलेवर नज़र आता.

युवा तो सरकार में जोड़े ही जायेंगे, यह अवश्यंभावी है पर जो कपड़े आप आप विशिष्ट मौके पर पहनते हैं उससे आपकी उपस्थिति का सौ फीसदी आकलन होता है. मनमोहनसिंह नई सरकार के गठन के मौके पर पुराने कपड़े पहनकर आ गए, इससे यही कयास बनता है कि जिन युवा भागीदारी का नवस्वप्न राहुल गांधी ने दिखाया है वह सरकार बनने की पहली सुबह ही खंडित हो गया है. यह जरुर होगा कि युवाओं का अंश आने वाले समय में सरकार में दिखे पर किसी बारात जैसे जश्न में नाईट सूट पहने आना यही दिखलाता है कि उस मौके का महत्व कितना आप समझ रहे हैं. मुझे नहीं लगता इस सरकार में युवाओं को आगे बढ़ाने की इच्छाशक्ति है. आगे दिखावे के युवा सरकार में जरुर दिखेंगे पर उन पर सरकार का जो विश्वास दिखना था वह नहीं दिखा है.

परिवर्तन जो हम चुनाव परिणमों में देख रहे थे वह सरकार में युवाओं की भागीदारी और युवाओं का सरकार पर विश्वास ही था. यही वजह थी जब यूपीए फिर सत्ता में लौटी तब भी परिवर्तन महसूस किया गया. सरकार जब वही हो तो परिवर्तन कैसा? फिर भी यह परिवर्तन इस भाव से महसूस हुआ कि राहुल गांधी के रुप में एक अच्छा युवा नेतृत्व कांग्रेस के पास है और जिसके साथ युवा नेताओं की टीम है. दोबारा बने प्रधानमंत्री मनमोहनसिंह यह भूल गए कि पुरानी सरकार नए कलेवर में परिवर्तन की है इसलिए परिवर्तन का जज्बा भी दिखाना पड़ेगा.

जज्बा तब ही दिखता है जब आप परिवर्तन चाहते हो और उसे महसूस करते हो,शायद इस अहसास की कमी इस सरकार में है.पहली किश्त में लगभग वही पुराने मंत्री है जो पिछली मनमोहन सरकार में मंत्री थे. जाहिर है नवगठित सरकार के विश्वसनीय लोग हैं जिनकी निष्ठा,ईमान,योग्यता और कार्य गुणवत्ता के पूरे सौ अंक है और पहली किश्त का मंत्रित्व इसी का तोहफा है.यह एक बड़ी गलतफहमी इस सरकार को है. यह जनादेश कतई इस बात का नहीं है कि आप की सरकार ने बीते पांच साला राज में कुछ बेहतर काम किया है. यह जनादेश इस विश्वास का है कि जो लोग सत्ता की दौड में थे उनमें से आपके पास ऐसे लोग अधिक हैं जो नई सोच के हैं और यही परिवर्तन का विचार है जो बहुमत के रुप में यूपीए को मिला है. शैली का निर्माण परिस्थितियों के अनुरुप होता है. विचार आपके हो सकते हैं लेकिन शैली में बदलाव आवश्यकता अनुरुप करना ही होते हैं. मनमोहनसिंह सरकार को सिर्फ युवाओं को ही सरकार में शामिल नहीं करना है बदलाव सरकार के काम में भी दिखना जरुरी है.इसलिए दिए गए विश्वास को समझना पड़ेगा और मौके के अनुसार कपड़े बदल कर अपना जज्बा दिखाना भी पड़ेगा क्योंकि बारात में नाईट सूट नहीं सूट पहने जाते हैं!

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक उत्तम झंवर द्वारा मे. मोर्या आर्ट प्रा.लि. के लिये अपनी दुनिया प्रिन्टर्स १३, प्रेस काम्पलेक्स एबी रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं ३०५ मोर्या आर्केड १/२ ओल्ड पलासिया, इंदौर में प्रकाशित फोन : ४०४१२६८